International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 02-12-2025, Accepted: 01-01-2026, Published: 16-01-2026
Volume 12, Issue 1, 2026, Page No. 27-29

जयनंदन की कहानियों में ग्रामीण जीवन

जॉन हेमिल्टन टोप्पो[1], डॉ. विश्वासी एक्का[2]
[1] शोधार्थी, हिन्दी साहित्य, संत गहिरा गुरू वि.वि.सरगुजा, अम्बिकापुर, छत्तीसगढ़, भारत
[2] शोध निर्देशक, शास. राजमोहिनी देवी कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अम्बिकापुर, छत्तीसगढ़, भारत

सारांश
जयनंदन जी का प्रारंभिक जीवन ग्रामीण परिवेश से जुड़े रहने के कारण उनके कहानियों में ग्राम जीवन की सूक्ष्म से सूक्ष्म अभिव्यक्ति हुई है। जयनंदन की कहानी को भोगे हुए यथार्थ की सपाट बयानी कहा जाए तो कोई अतिश्योंक्ति नही होगी। उन्होंने बिहार के नवादा जिले के ग्रामीण अंचल के ग्रामीण जीवन, परिवेश, बोली–भाषा, रीति–रिवाज, आचार–विचार को अपनी कहानियों में सरल एवं सहज रूप से चित्रित किया है। उन्होंने अपनी कहानियों में ग्रामीण अंचल के सकारात्मक और नकारात्मक पक्ष का सजीव चित्रण किया है। जयनंदन जी ने अपनी कहानियों में जीवन के कई सामाजिक विसंगतियों एवं मानव मूल्यों की यथार्थ का सूक्ष्म विश्लेषण करने का प्रयास किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में जयनंदन के कहानियों मे ग्रामीण जीवन पर दृष्टिपात किया गया है।

मूल शब्दः फुला, अंकुराना, कोड़ना, निकाना, पालकी, महुआरी

प्रस्तावना
भारत ग्रामीणों का देश है। यहाँ के बहुसंख्यक लोग गाँव में निवास करते हैं। इसकी अपनी साहित्य, कला, संस्कृति है जिसमें मूल रूप से उच्च नैतिक बोध, मानव मूल्य, सामूहिकता और प्रकृति के सहज रूप से साहचर्य समाहित है। ग्रामीण जीवन और संस्कृति की पहचान वहां के रीति–रिवाज, आचार–विचार, परम्पराएं, रहन–सहन, सामाजिक संबंध, बोली–भाषा, सांस्कृतिक मूल्य आदि में है। गांधी जी ने गांवों को बहुत अधिक महत्व दिया है। गांधी जी अनुसार गांव में सुधार और विकास होना चाहिए । लेकिन स्वतन्त्रता के पश्चात् देश की विकास प्रक्रिया के दौरान हो रहे औद्योगिकीकरण, नगरीकरण और भूमण्डलीकरण ने शहरों की तरह गांवों में भी एक नवीन संस्कृति को जन्म दिया। वर्तमान समय में विश्वग्राम की परिकल्पना की आड़ में गांवों की अस्मिता और पहचान नष्ट होती जा रही है। जो गांव पहले आपसी भाईचारे और धार्मिक रूप से पूर्णतः सहिष्णु थे, आज वह आपसी बैर एवं द्वेष का अड्डा बनता जा रहा है।

जयनंदन का जन्म 26 फरवरी 1956 ई. को बिहार के नवादा जिले के मिलकी गांव में हुआ था । वे लगभग 17 वर्षों तक गांव मे रहे। जयनंदन ने ग्रामीण जीवन को बहुत नजदीक से देखा और परखा भी है। उनका जीवन ग्रामीण एवं नगरीय दोनों क्षेत्रों से संबंधित रहा है। जयनंदन की अधिकांश कहानियों में ग्राम्य जीवन का चित्रण है। उनकी कहानियों में गांव में होने वाले विभिन्न पर्व, त्यौहार, उत्सव, समारोह आदि का अंकन हुआ है।

जयनंदन ने गांव में व्याप्त समस्याओं को अपने कहानियों में चित्रित करने का प्रयास किया है। उन्होंने अमीर–गरीबी की खाई और बाल जीवन, युवा वर्ग, बुजुर्ग वर्ग आदि के जीवन के चित्रण, साथ ही साथ गांव के भ्रष्ट व्यवस्था का भी वर्णन किया है।

जयनंदन की कहानी बिहार के नवादा जिले में बोली जाने वाली मगही बोली, वहां के ग्राम्य जीवन के यथार्थ को बेबाकी से प्रस्तुत करती है, जिसे भारत देश के समकालीन गांवों का जीवन्त, प्रामाणिक एवं प्रातिनिधिक दस्तावेज कहना बिलकुल भी अतिश्योंक्ति नहीं होगी।

जयनंदन की कहानी में ग्राम्य जीवन
जयनंदन जी की कहानियां विस्तृत फलक लिए हुए है। उनकी कहानियों में ग्राम जीवन के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक, शैक्षिक क्षेत्रों से संबंधित विभिन्न समस्याओं का वर्णन मिलता है। गांव में छुआछूत प्रमुख समस्या रही है। जयनंदन की 'विषवेल' और 'कद्दावर' में ग्रामीण समाज में प्रचलित छुआछूत का वर्णन मिलता है। उनकी 'विषवेल' कहानी में सवर्णों और दलितों के मध्य व्याप्त छुआछूत एवं जातीय संघर्ष का चित्रण मिलता है। ''जात–पात के नाम से लड़ने से फुर्सत हो तब तो कोई कुछ करे । सारी ऊर्जा तो लड़ने, भागने और छिपने में खत्म हो जाती है। अभी तो शुरूआत हुई है, तुम्हें हैरानी के अभी ऐसे कई पड़ाव मिलेंगे । नहर, बिजली, स्कूल, कॉलेज– सबका यही हाल है। ''[1] महेन्द्र भटनागर के अनुसार – '' छुआछूत हिंन्दु समाज की एक भयंकर सामाजिक बीमारी है। धार्मिक अंधविश्वासों द्वारा घोषित छुआछूत की भावनाएँ हिंदू समाज के अधिकांश जनों में व्याप्त है। वे लोग चाहे अनपढ़ ग्रामीण स्त्री–पुरूष हो या पढ़े–लिखे नागरिक, दोनों अपने को इस सामाजिक कुरीति से मुक्त नहीं कर सके हैं ।''[2] इस प्रकार जयनंदन जी की कहानियों में ग्रामीण समाज में व्याप्त छुआछूत का यथार्थ चित्रण हुआ है।

हमारे देश के ग्रामीण समाज में अंधविश्वास एवं रूढ़िवादी परम्पराएँ प्रचलित रही है। इस संबंध में डॉ. विवेकी राय लिखते हैं – ''गांव को अंधविश्वासों से काटकर यदि पृथक कर दिया जाए तो वह गांव नहीं रह जाता है। गांव का अर्थ है विश्वास और शताब्दियों का यह विश्वास अंधकारिविष्ट रहा, अतः 'अंधविश्वास' होकर उसके साथ इस प्रकार जुड़ गया है कि अनिवार्य अंग हो गया है।''[3] जयनंदन ने अपनी कहानियों में अंधविश्वासों एवं रूढ़िवादी धारणाओं का यथार्थ चित्रण किया है। उनकी 'हिलती हुई नींव' में धार्मिक आडम्बर का यथार्थ दृष्टव्य है – '' पत्नी, मां एवं दीदी ने एक सामूहिक बयान जारी किया कि गृह–प्रवेश की रस्म अब बाकायदा खूब अच्छी तरह पूरी की जाए । मैंने भी ऐसा होने में ही अपनी खैर समझी । चूंकि अब अगर बिल्ली भी कोई सामान उड़का देती या चूहा भी घर में दौड़ जाता तो उसका संबंध में मेरी नास्तिकता से जोड़ देती । बाहर कोई सांप नजर आ जाता तो वह कह उठती नींव में नाग–नागिन नहीं डाली गयी, इसीलिये ये जहरीले जीव खार खाये घूम रहे हैं ।''[4]

भारत देश के ग्रामीण समाज की आजीविका का मुख्य स्रोत कृषि है। जयनंदन की कहानियों में कृषि कार्य से संबंधित बुवाई, कटाई, खेत, खलिहान आदि का सटीक चित्रण हुआ है। 'बदरी मैंया', 'छोटा किसान', 'एक अकेले गान्ही जी' आदि कहानियों में कृषि काम धंधों का उल्लेख मिलता है। जयनंदन जी के

कहानियों में साधारण किसानों के द्वारा परम्परागत तौर–तरीकों से जैसे – हल–बैल आदि के इस्तेमाल का उल्लेख प्राप्त होता है। जयनंदन जी ने 'छोटा किसान' कहानी में कृषि कार्य को न सिर्फ रोजी रोटी का साधन बताया है, परन्तु उन्होंने कृषि कार्य को धर्म की संज्ञा दी है। 'छोटा किसान' कहानी में लिखते हैं – '' धान, गेहूं मकई, महुआ आदि में जब बाली निकल रही होती, सरसों, रहड़, ज्वार जब फुला रहे होते तो इन्हें देखने के सुख की भला क्या कहीं बराबरी हो सकती है ? पौधों का अँकुराना, पत्तों का निकलना, धीरे–धीरे इनका बड़ा होना, इन्हें कोड़ना, पटाना, निकाना आदि सभी किसानी– धर्म में एक बच्चे को पालने, परवरिश करने जैसी मां वाली परितृप्ति क्या शहर में दूसरे पेशे में मयस्सर हो सकती है? पौधे जितनी अवस्थाओं से गुजरते है वे सब मानो एक करिश्मा होता है, एक कुदरती जादू! विरासत में उन्हें यही पाठ मिला है कि किसानी कोई धन्धा नहीं बल्कि एक शुद्ध–सात्विक सेवा है , ईश्वर भक्ति जैसी । इसमें जो स्वाभिमान है, खुद्दारी है, सृजन का परितोष है, वह किसी बड़े से बड़े पेशे में भी मुमकिन नहीं ।''[5] इस तरह से जयनंदन जी ने गांव के कृषि कार्य को महिमामण्डित किया है।

जयनंदन जी ने 'छोटा किसान ' कहानी में दाहू महतो के माध्यम से गांव के मिट्टी से भावनात्मक लगाव और उत्साह के साथ कृषि कार्य को करते हुए गांव के सादगीपूर्ण जीवन का चित्रण किया है। ''गांव की सादगी सरलता में जीने के अभ्यस्त, पुरखों की माटी से जुड़ाव, गांववासियों से हित–मीत–गीत के रिश्ते , अमराई –तड़बन्ना–महुआरी आदि के प्रति रागात्मकता, इस उम्र में वे इस सबको बिसराना नहीं चाहते। हल जोतते हुए ताजी मिट्टी से जो सोंधी खुश्बू निकालती है, उससे छाती में मानो एक नयी संजीवनी मिल जाती है।''[6]

जयनंदन के कहानियों में वर्तमान समय में ग्रामीण युवा वर्ग का कृषि कार्य से विमुख होकर नौकरी और अन्य व्यवसाय की ओर उन्मुख होने का चित्रण मिलता है। 'छोटा किसान' कहानी में चित्रित करते हुए लिखते है –''अब खेती बाड़ी हम छोटे किसानों के लिए कुछ नहीं रखा है बाऊ, घर खेत बेचकर हमें शहर जाना ही होगा । सोचने–बिचारने में हमने बहुत टैम बर्बाद कर लिया ।''[7] 'सूखते स्रोत,' 'आई. एस. ओ. 9000', 'मुंगा से भये राख', 'बॉडीगार्ड' आदि कहानियों में भी ग्रामीण युवाओं के नगरोन्मुख होकर नौकरी व्यवसाय अपनाने का वर्णन प्राप्त होता है। इस प्रकार जयनंदन जी ने अपने कहानी में ग्रामीणों के आय के साधन को बदले हुए संदर्भ में चित्रित किया है। 'बॉडीगार्ड' कहानी के पात्र भूदेव का नौकरी करने का अंकन प्राप्त होता है –''उस दिन भूदेव घर लौटा था कहीं से, शायद जिला मुख्यालय स्थित एक कॉलेज से पार्ट–टाईम क्लास लेकर, तो देखा उसने कि पिता घर के लोगों में लड्डू बांट रहे है और सभी लोग बड़ी प्रसन्न मुद्रा में है, जैसे एक ऐतिहासिक अवसर को सेलिब्रेट कर रहे हों । मां ने उसे कई लड्डू एक साथ थमाते हुए कहा – तुम्हारे बाउजी आज नौकरी पक्की करके आये हैं ।''[8]

गांव के भोले–भाले, सीधे–साधे, सरल, निश्छल लोग नेताओं और अधिकारियों के झूठे एवं बनावटी आश्वासनों पर आसानी से विश्वास कर लेते है। ऐसे आश्वासन कभी पूरे नहीं होते हैं और गांव के गरीब लोग और गरीब होते जाते हैं । 'बेअंत परिधि वाले जाल' कहानी में राजनीति, भ्रष्टाचार और घृणित षड़यंत्र का यथार्थ चित्रण हुआ है। ''ग्रामीण बैंकों से ग्रामीणों को सहायता पहुंचाने के नाम पर उन्हें और धकेला जा रहा था गर्त में। बैंक ऋण आबंटित करता है भैंस के लिए। भैंस के एजेंट आते हैं। पशु चिकित्सक उनकी नकारा भैंसों को फिट सर्टिफिकेट दे देते हैं। वे भैंसें ग्रामीणों में वितरित कर दी जाती है। फिर वे ही एजेंट उनसे आधे से कम दामों में भैंसें खरीद लेते हैं। पुनः वे ही भैंस दूसरे गांवो में वितरित कर दी जाती है, एजेंट फिर खरीद लेते हैं। इस तरह धरती गोल का चक्र चलता रहता है और गरीबी रेखा से नीचे के लोग उपर उठते रहते हैं कर्ज की तरफ । प्रमाण सहित इसका हो–हल्ला करने पर भी कुंभनिन्द्रा पर कोई प्रभाव नही ।''[9]

आजादी के बाद लगभग आधी शती बीत जाने के उपरांत आज भी ग्रामीण जीवन अभावग्रस्त, त्रासदपूर्ण स्थितियों में बीत रहा है। बिजली , पानी, सड़क, परिवहन, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि कई प्राथमिक आवश्यकताओं के अभाव में ग्रामीणों का जीना मुश्किल हो गया है। जयनंदन जी ने अपनी कहानी में ग्राम संबंधी सरकारी नीति के प्रति उदासीन रवैया का यथार्थ चित्रण किया गया है। उनकी कहानी 'गांव की सिसकियाँ' में गांव के पिछड़ापन, अभाव, दुर्दशा और सरकारी उपेक्षा आदि की यथार्थ अभिव्यक्ति हुई है। '' मैनें अपने चचेरे भाई संजय से फोन पर बात की, लेकिन कई घरों में टेलीफोन लग गया था । संजय ने बातचीत में मुझे कई हिदायतें और आशंकाएँ थमा दी थी, रात में नहीं आना है, दिन में भी आने पर एक–दो आदमी साथ हो तो अच्छा रहेगा, कम से कम नवादा आकर अपने एक–दो आदमी को साथ कर लिया जाए, पिछले एक महीने में आसपास के गांवों के आठ आदमी मारे गए हैं और छह आदमी अपहृत हुए हैं ।''[10]

जयनंदन की कहानियों में ग्रामीण समाज में सम्पन्न होने वाले विवाह के स्वरूप में होने वाले परिवर्तनों का चित्रण हुआ है। उन्होंने बाल–विवाह, अमीर एवं गरीब में विवाह, सवर्ण एवं दलित में विवाह आदि में होने वाले परिवर्तन का भी वर्णन किया है तथा प्रेम विवाह का भी चित्रण हुआ है। 'नास्तिक मंदिर और मटन की दुकान' कहानी में परशु नामक ब्राह्मण लड़के का जगनी नामक दलित लड़की से प्रेम विवाह का चित्रण मिलता है। भारतीय गांव में विवाह के अवसर पर विविध प्रकार के रस्म–रिवाजों का प्रचलन रहा है। जयनंदन की कहानियों में भी गांव में सम्पन्न होने वाले विवाह संबंधी विभिन्न रस्मों–रिवाजों का जिक्र हुआ है। उनकी 'खैरियत की खाक' कहानी में विवाह के सुअवसर पर वर–वधु का पालकी पर चढ़ने का चित्रण हुआ है। पालकी, जो कल्याणी नाम से जानी जाती थी, जिसके दोनों तरफ के द्वार पर तुलसी की यही चौपाई लिखी थी। ''परहित सरिस धरम नहीं भाई, पर पीड़ा सम नहिं अधमाई। कल्याणी पूरे इलाके में परिचित थी। किसी से भी पूछकर आप इसकी महिमा का बखान सुन लीजिए। इसके बारे में पीढ़ियों से यह मान्यता चली आ रही थी कि वर–वधु इस पर चढ़ ले तो उनकी विवाह का शुभ, सफल और सुखमय होना निश्चित है।''[11]

जयनंदन के 'भतरछाड़ी', 'चितामन चा का नरक', 'सूखते स्रोत' आदि कहानियों में अनमेल विवाह का यथार्थ चित्रण हुआ है। चितामन चा अपने शराबी बेटे सौखी के मृत्यु के पश्चात् अपनी विधवा बहु सुपौली की दूसरी विवाह करवाते हैं। सुपौली के विधवा होने के कारण उसका विवाह एक ऐसे आदमी से होता है जिसके पहली पत्नी से चार बच्चे हुए थे। उसमें से एक बच्चे का उम्र भी सुपौली से दूनी थी। ''परेमन ने वर की तलाश शुरू कर दी थी। बहुत मुश्किल से पैसे का लालच देकर एक दोहाजू को वह पटा सका था। जिसके पूर्व पत्नी से चार बच्चे थे। लड़के का उम्र भी बहू से दूनी थी, पर खाता–पीता परिवार था।''[12]

समकालीन समय में भारतीय गांव में संयुक्त परिवार के विघटन एवं बिखराव आदि का चित्रण जयनंदन की कहानियों में मिलता है। जयनंदन के 'माटी के बलमुंआ', 'बदरी मैया' आदि कहानियों में संयुक्त परिवार का यथार्थ चित्रण हुआ है। 'बदरी मैया' कहानी में बदरी मैया संयुक्त परिवार के मुख्या के रूप में सभी दायित्वों का निर्वाह करती है फिर भी उन्हे परिवार में उचित मान–सम्मान नहीं मिलता है बल्कि बेटे–बहुओं के द्वारा उनका अनादर करने का अनुभव का चित्रांकन हुआ है – ''उस दिन मैया को समझ में आ गया कि इस घर की मालकिन वह नहीं रही बल्कि बहू लोग हो गयी। बड़ा अरमान था न मैया को कि हम अपने देवन–सीवन के लिये सुंदर–सुघड़ और नेक पतोहू चुनकर लायेंगे। सैकड़ों

लड़कियों को देखने के बाद बाप बनकर मैया ने खुद इनका चुनाव किया था। मगर बबनी के लिये जब वर ढूँढ़ने का मौका आया तो उसमें पहले जैसी ताकत नहीं रही थी। दूसरी बात थी कि घर में दो जवान बेटों के रहते उसे ऐसा करना शोभा भी नही देता सो इन पर आश्रित हो जाना पड़ा था।''[13]

जयनंदन के कहानियों में बाल जीवन, युवा जीवन और बुजुर्ग जीवन का यथार्थ अंकन हुआ है। 'कायान्तरण' '*अप्रकट*' 'मल्टीपरपस सर्विसेस' आदि कहानियों में बाल जीवन के सभी पहलुओं का सटीक अंकन हुआ है। 'कायान्तरण' कहानी में उन्होंने श्लेष नामक साहसी बालक का वर्ण किया है। जिसमें बालक का बचपन उसकी नेकी, उसके भोलेपन और निश्छल वृत्ति ने चोर के इरादे के समक्ष एक चनौती खड़ा कर देता है। '' हाँ मैं जानता हूँ तुम चोर हो। लेकिन मैं चिल्ला नही सकता, चूँकि मेरे बीमार पापा को आठ रोज बाद नींद आयी है। डॉक्टर अंकल ने कहा है कि इन्हें नींद लगे तो किसी भी तरह बीच में टूटने न पाये। तुम चोर हो, मगर तुम्हारे पैर जख्मी हो गये हैं, पापा ने मुझे सिखाया है कि आदमी कोई भी हो, कैसा भी हो, अगर वही तकलीफ में है तो उसकी मदद करनी चाहिए ।''[14]

जयनंदन की 'घर फूँक तमाशा' और 'और रास्ता क्या है' कहानी में युवा वर्ग के बेरोजगार स्थिति का चित्रण है। रोजगार न मिलने के कारण युवाओं के अपराध जगत में कदम रखने का भी वर्णन मिलता है। ''मुझे तो इसकी कोई उम्मीद नही दिखती। एक नौकरी के लिए जहां एक एक हजार उम्मीद्वार हों, वहां ऐसी उम्मीद महज एक खुशफहमी है, पापा। नये की छोड़िए, जब पुराने नौकरीशुदा लोग नौकरी से हर जगह सरप्लस बता कर हटाये जा रहे हैं, जब हजारों संस्थान बंद हो रहे हैं, कंप्यूटर और रोबोट आदमियों की जगह ले रहे हैं, तो नयी युक्ति के फिर स्कोप ही कहां बचत है?''[15]

'नागरिक मताधिकार', 'चितामन चा का नरक', 'बदरी मैंया' आदि कहानियों में जयनंदन जी ने बुजुर्गों के जीवन का यथार्थ चित्रण किया है।

निष्कर्ष

भारत का गांव एक नया रुप धारण कर रहा है। कथाकार जयनंदन ने गांव के बदलते हुए तेवर को बहुत बारीकी से महसूस किया है। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से पाठकों के समक्ष गांव की संवेदना को यथार्थ रूप में प्रस्तुत किया है। देहाती संस्कृति पर आस्था रखने वाला रचनाकार जयनंदन का विश्वास है कि – ''गांव अब भी बचा है और इसे बचाया जा सकता है।''[16]

संदर्भ सूची

1. जयनंदन – सूखते स्रोत – विषवेल, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, 2003, पृष्ठ 36
2. डॉ. महेन्द्र भटनागर–समस्या मूलक उपन्यासकार प्रेमचन्द ,ज्ञान भारती दिल्ली –1982, पृष्ठ 116
3. विवेकी राय – स्वातंत्रयोतर हिन्दी कथा साहित्य और ग्राम जीवन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 1974, पृष्ठ 261
4. जयनंदन–दाल नहीं गलेगी– हिलती हुई नींव, पुस्तक भवन, नई दिल्ली– 2005, पृष्ठ 97
5. जयनंदन–विश्व बाजार का ऊँट–छोटा किसान, दिशा प्रकाशन, दिल्ली– 1997, पृष्ठ 87
6. वही, पृष्ठ 87
7. वही, पृष्ठ 83
8. जयनंदन–विश्व बाजार का ऊँट–बॉडीगार्ड, दिशा प्रकाशन, दिल्ली– 1997, पृष्ठ 93
9. जयनंदन–दाल नही गलेगी अब–बेअंत परिधि वाले जाल, पुस्तक भवन, नई दिल्ली– 2007, पृष्ठ 72
10. जयनंदन – गाँव की सिसकियाँ – गाँव की सिसकियाँ, पुस्तक भवन, नई दिल्ली– 2012, पृष्ठ 173
11. जयनंदन – एक अकेले गान्ही जी –खैरियत की खाक, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली– 2001, पृष्ठ 11
12. जयनंदन–दाल नही गलेगी अब–चितामन चा का नरक, पुस्तक भवन, नई दिल्ली– 2005, पृष्ठ 46
13. जयनंदन–कस्तुरी पहचानों वत्स– बदरी मैया, आधार प्रकाशन, पंचकुला हरियाणा– 2001, पृष्ठ 12
14. जयनंदन–गुहार – कायान्तरण, रेमाधव पब्लिकेशन प्रा.लि., गाजियाबाद – 2008, पृष्ठ 114
15. जयनंदन–घर फूंक तमाशा – घर फूंक तमाशा , ज्ञान भारती., रूपनगर दिल्ली – 2004, पृष्ठ 02
16. जयनंदन – सूखते स्रोत – विषवेल, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, 2003, पृष्ठ 45